भारतीय कर्मकाण्ड विभाग

मानविकी विद्याशाखा,

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020

के अन्तर्गत संचालित पाठ्यक्रम बी.ए.-23 के पंचम सेमेस्टर

बी.ए.के.ए. (एन) आरपी-331

के लिए

शोध परियोजना कार्य की रुपरेखा एवं

प्रोजेक्ट कार्य हेतु दिशानिर्देश

(Outline of research project work and guidelines for project work for BAKA(N)-RP-331, fifth semester of BA-23 course conducted under National Education Policy-2020)

शोध परियोजना दिशा निर्देश तैयार करने वाली कमेटी

Committee for preparing research project guidelines

क्र. सं.	विशेषज्ञों के नाम	पदनाम
1.	डॉ. नन्दन कुमार तिवारी	असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक
2.	डॉ. प्रमोद जोशी	असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी)
3.	डॉ. रंजीत दूबे	असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी)

A. शोध परियोजना के सामान्य नियम और निर्देश:-

(जुलाई-दिसम्बर, 2025)

- बी.ए.के.ए. (एन)-331 पंचम सेमेस्टर में शिक्षार्थियों को शोध परियोजना प्रस्ताव (Research Project Proposal) एवं शोध प्रबन्ध कार्य करने हेतु विश्वविद्यालय के कर्मकाण्ड विषय के प्राध्यापक से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा। अत: शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे ज्योतिष-कर्मकाण्ड विषय के विभागाध्यक्ष से सम्पर्क कर मार्गदर्शन प्राप्त करें।
- बी.ए.के.ए. (एन)-331 पंचम सेमेस्टर के जिन शिक्षार्थियों ने शोध परियोजना (Research Project) कार्य को लिया है वह जुलाई-दिसम्बर 2025, सत्र के अन्तर्गत अध्ययनरत पंचम सेमेस्टर के शिक्षार्थियों को नीचे दिए गए किसी एक विषय पर मौलिक रिसर्च प्रोजेक्ट लिखकर 31 जनवरी 2026 तक विश्वविद्यालय के वैदिक ज्योतिष- भारतीय कर्मकाण्ड विभाग, मानविकी विद्याशाखा में स्वयं या रजिस्टर्ड डाक द्वारा जमा कराना होगा।
- सर्वप्रथम शिक्षार्थियों को एक शोध प्रबन्ध प्रस्ताव तैयार कर विश्वविद्यालय को निम्नलिखित मेल आईडी0 पर प्रेषित करना होगा dok@uou.ac.in
- विश्वविद्यालय के भारतीय कर्मकाण्ड विभाग द्वारा शोध परियोजना प्रस्ताव का अवलोकन कर आवश्यक दिशा निर्देश एवं सुझाव, शोध प्रबन्ध प्रस्ताव उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय को प्रेषित करने की अंतिम तिथि के एक सप्ताह पश्चात् विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर अपलोड कर दिए जायेगें।
- जिन शिक्षार्थियों का शोध परियोजना प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया जायेगा, उन शिक्षार्थियों को अपना शोध परियोजना प्रस्ताव आवश्यक सुधार के साथ एक सप्ताह के भीतर पुन: विश्वविद्यालय (Only Soft Copy) को प्रेषित करना होगा।
- कोई भी परियोजना प्रस्ताव, जो विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया हो, उसका परियोजना प्रस्ताव स्वीकृति के बिना किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
- विश्वविद्यालय द्वारा शोध परियोजना प्रस्ताव की स्वीकृति की पुष्टि हो जाने पर ही शिक्षार्थी अपना परियोजना कार्य प्रारम्भ करें।
- शिक्षार्थियों को शोध परियोजना प्रस्ताव के साथ अपने पर्यवेक्षक (Facilitator) का एक बायो-डेटा अनिवार्य रूप से संलग्न करना होगा, इसके बिना किसी भी विद्यार्थी का शोध प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार्य नहीं किया जायेगा।
- विश्वविद्यालय को भेजा गया शोध परियोजना विद्यार्थियों को वापस नहीं किया जायेगा।
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना शोध परियोजना के लिए स्वयं अध्ययन करें तथा कार्य में मौलिकता होनी चाहिये। नकल किया गया कार्य स्वीकार्य नहीं किया जायेगा।

- यदि विश्वविद्यालय द्वारा किन्हीं दो शिक्षार्थियों के शोध प्रबन्ध का विषय एवं क्षेत्र समान पाया गया अथवा अनुवाद करके दूसरे विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया तो उनका शोध प्रबन्ध निरस्त कर दिया जायेगा।
- परियोजना कार्य में मार्गदर्शन हेतु कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।
- आपका परियोजना कार्य हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी भाषा में डबल स्पेस, फॉन्ट साईज-14 में ए-फोर पेपर- साईज़ में होना चाहिए।
- परियोजना कार्य टाईप होने के पश्चात आपके द्वारा पुनः टाइपिंग अशुद्धियों को देखकर उनको शुद्ध करा लिया जाए। शोध प्रबन्ध कार्य में पृष्ठ संख्या अवश्य अंकित करें।
- रिसर्च प्रोजेक्ट कार्य की बाइंडिंग हार्ड कवर पेज के साथ होनी चाहिए। प्रोजेक्ट के प्रथम पन्ने पर शिक्षार्थी का नाम, एनरोलमेंट न० व स्टडी सेंटर का पूरा पता आदि उल्लिखित होना चाहिए एवं पर्यवेक्षक (Facilitator) का पूरा नाम भी लिखा होना चाहिए। जिसका प्रारूप इस निर्देशिका के अंत में संलग्न है।
- परियोजना कार्य के साथ शिक्षार्थियों को इस पुस्तिका के अन्तिम भाग में प्रारूप 1 से 3 भरकर संलग्न करना अत्यंत आवश्यक है।
- परियोजना कार्य प्राथमिक तथ्यों /द्वितीयक स्रोतों पर आधारित होना चाहिए ।
- शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन व अध्ययन अवश्य करें, इससे आपकी विषय सम्बन्धी जानकारी में वृद्धि होने के साथ-साथ आपका शोध कार्य बेहतर होगा।
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने रिसर्च प्रोजेक्ट की तीन प्रतियां तैयार करें जिसमें से एक विश्वविद्यालय हेतु, दूसरी शोध निर्देशक हेतु एवं तीसरी प्रति स्वयं उपयोग के लिए होगी।
- शीर्षक उपशीर्षक के लिए 16-18 तक कोकिला (यूनिकोड) फॉन्ट साइज इस्तेमाल किया जा सकता है जबकि मुख्य फॉन्ट साइज अंग्रेजी में 12 होगा एवं हिंदी में 16 तक रख सकते हैं। इससे कम या ज्यादा फॉन्ट होने पर अध्ययन अस्वीकार किया जा सकता है।
- रिसर्च प्रोजेक्ट कार्य में न्यूनतम 100 पृष्ठ होने अनिवार्य हैं जिसकी हार्ड बाईडिंग होनी आवश्यक है।
- बिना संदर्भ-सूची के जमा किये गये अध्ययन कार्य किसी भी दशा में स्वीकार्य नहीं होगा।
- परियोजना कार्य के प्रस्तावित /रूपरेखा को अपने शोध निर्देशक की स्वीकृति के उपरांत विश्वविद्यालय के वैदिक ज्योतिष विभाग में अंतिम स्वीकृति हेतु शोध निर्देशक एवं स्वयं के मूल हस्तारक्षित प्रति स्वयं या पंजीकृत डॉक के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त निश्चित तिथि तक प्रेषित किया जाना अति आवश्यक होगा अन्यथा की दशा में शोध प्रस्ताव / रूपरेखा को स्वीकार नहीं माना जायेगा जिसके लिए स्वयं शिक्षार्थी जिम्मेदार होगा।
- रिसर्च प्रोजेक्ट कराने के लिए वहीं शोध निर्देशक योग्य होगें जिनके द्वारा पी-एच.डी. की उपाधि अर्जित की गयी हो और किसी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में स्थायी, अस्थायी एवं संविदा शिक्षक या विश्वविद्यालय/महाविद्यालयों में उनका पदनाम जिस भी नाम से जाना जाता हो, के रूप से कार्यरत हो। इसके साथ ही उनको शोध कार्य/लघुशोध/रिसर्च प्रोजेक्ट निर्देशन का न्यूतनतम 2 वर्ष का अनुभव हो।
- रिसर्च प्रोजेक्ट हेतु जिन शोध निर्देशकों को चयनित किया जायेगा उनके नाम माननीय कुलपति महोदय के अनुमोदन के पश्चात् वैदिक ज्योतिष विभाग द्वारा सम्बन्धित शोध निर्देशक को इमेल के माध्यम से या विश्वविद्यालय की बेबसाइट के माध्यम से अवगत कराया जायेगा।
- शोध परियोजना कुल 100 अंकों का होगा जिसमें 70 अंक रिसर्च प्रोजेक्ट हेतु निर्धारित हैं और 30 अंकों की मौखिक परीक्षा होगी। शिक्षार्थियों को शोध परियोजना कार्य उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक अर्जित करने अनिवार्य होगें तभी वह मौखिक परीक्षा हेतु अर्ह माना जायेगा। जो शिक्षार्थी प्रोजेक्ट कार्य 50 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करता है

उसको अनर्ह माना जायेगा अतः ऐसे शिक्षार्थियों को आगामी सत्र में बैक परीक्षा फार्म भरके पुनः रिसर्च प्रोजेक्ट कार्य करना होगा।

- शोध परियोजना में साहित्यिक चोरी हेतु न्यूनतम 10 प्रतिशत का मानदण्डक यूजीसी द्वारा निर्धारित किया गया है वही मान्य होगा। डिज़र्टेशन को किसी विश्वसनीय साहित्यिक चोरी जांच सॉफ्टवेयर के माध्यम से जांच कराके उसका प्रमाण पत्र प्रोजेक्ट में संलग्न करना अनिवार्य होगा। 10 प्रतिशत से अधिक प्लेगरिज्म होने पर शोध परियोजना (Research Project) स्वीकार नहीं किया जायेगा।
- शोध परियोजना में मार्गदर्शन कराने वाले शोध निर्देशकों को विश्वविद्यालय नियमानुसार प्रति शिक्षार्थी के आधार पर भुगतान किया जायेगा।
- शोध परियोजना के मूल्यांकन हेतु परीक्षकों को भी विश्वविद्यालय के नियमानुसार भुगतान किये जाने का प्रावधान निहित होगा।
- प्रारूप में दिए गए विषयों से अतिरिक्त प्रत्येक सत्र में शोध परियोजना के लिए दिए जाने वाले शोध शीर्षकों में विभागीय स्तर पर भी परिवर्तन किया जा सकता है।

आवश्यक तिथियाँ –

- शोध परियोजना से सम्बन्धित आवश्यक तिथियाँ विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध होंगी।
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना शोध परियोजना प्रस्ताव उक्त मेल आईडी dok@uou.ac.in पर प्रेषित करें।
- निर्धारित तिथि के पश्चात् प्रेषित किए गए शोध परियोजना कार्य किसी भी दशा में विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार्य नहीं किए जायेंगे।
- निर्धारित तिथि के पश्चात् भेजे गए शोध परियोजना कार्य अगले सत्र में बैक पेपर परीक्षा के माध्यम से स्वीकार्य किए जायेंगे।

प्रस्तावना Introduction)-

कर्मकाण्ड के शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि उन्होंने कर्मकाण्ड पाठ्यक्रम के अन्तर्गत जो ज्ञान प्राप्त किया है उसका उपयोग करके क्षेत्र-कार्य और ऐतिहासिक गवेषणा की विधियों से भी अवगत हो सकें। हमारा मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों का कर्मकाण्ड में अभिरूचि पैदा करना है, कर्मकाण्ड में अन्वेषण का अभ्यास कैसे किया जाता है, इसके संदर्भ में शिक्षार्थियों की प्रवृत्ति को जागरूक करना है। विशेष रूप से हम शिक्षार्थियों से यह आशा करते हैं कि वे अपने स्थानीय स्तर पर शास्त्रों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए किये गये कार्यों का भी अवलोकन करने हुए कालान्तर में हो रहे कार्यों को करके उस जगह को भरने का प्रयास करें जो मुख्यधारा के ऐतिहासिक विमर्श में प्राय: अनदेखी रह जाती हैं, जबकि ये सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संरचनाओं, और सामूहिक स्मृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह मॉड्यूल स्नातक छात्रों को उनके आस-पास के स्थानों में, अपने मण्डल में, अपने राज्य में, अपने देश में कर्मकाण्ड का अन्वेषण और दस्तावेज़ीकरण करने के लिए प्रेरित करता है। इसके साथ ही यह शोध परियोजना कार्य भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न पहलुओं पर भी रोचक कार्य करने की आशा करता है। जिसमें प्राचीन भारत ने वेद-वेदांग, कर्मकाण्ड, अनुष्ठान, व्याकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, सांख्य सिद्धांत, तर्कशास्त्र, जीवन विज्ञान, आयुर्वेद, एवं संगीत। जैसे विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्र तथा पारम्परिक तकनीकों के सम्बंध में शोध परियोजना कार्य करने को हम प्राथमिकता दिए जाने की आशा करते। हैं। यह छात्रों को विभिन्न स्तरों पर कर्मकाण्ड की कार्यप्रणाली को समझने में मदद करता है, साथ ही जीवंत अनुभवों को साहित्यिक साक्ष्य के रूप में महत्व देने की प्रेरणा देता है। पारंपरिक दृष्टिकोण को अवलोकित कर नूतन ज्ञान की विधियों को अपनाने पर जोर देता है, जो कि हमारे नये शोध अनुसंधान को भी और दैनिक जीवन को प्राथमिकता देती हैं। यह कार्य अनुसंधान के अभिनव तरीकों, अंतर्विषयक दृष्टिकोणों और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से छात्रों में आलोचनात्मक

सोच, कौशल और कर्मकाण्ड के प्रति एक समावेशी दृष्टिकोण विकसित करने का लक्ष्य रखता है। अतः कर्मकाण्ड के शिक्षार्थियों में शोध दक्षता उत्पन्न करने हेतु उन्हें शोध कार्य करना एक आवश्यक क्रियाकलाप है। जिसमें एक शीर्षक का चुनाव कर अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करना होता है। शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने के लिए सर्वप्रथम एक शोध परियोजना प्रस्ताव (Research Proposal) का निर्माण करना होता है। आपका शोध परियोजना प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार कर लिये जाने के पश्चात शोध प्रबन्ध कार्य को पूर्ण करना होगा। शोध प्रबन्ध प्रस्ताव एंव शोध प्रबन्ध कार्य सम्पन्न करने हेतु आपको उचित मार्गदर्शन की अवश्यकता होगी। रिसर्च प्रोजेक्ट प्रस्ताव एंव रिसर्च प्रोजेक्ट करने हेतु अपने शैक्षिक परामर्शदाता (Academic Facilitator) से सम्पर्क करें तथा उनसे शोध प्रबंध कार्य करने हेतु पर्यवेक्षक के चयन में सहयोग मागें। यही सहयोगी जो आपको डिज़र्टेशन कार्य को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करेगें आपके फैसिलिटेटर कहलायेगें। आपके फैसिलिटेटर ही आपको शोध कार्य पूर्ण करने में सहायता प्रदान करेंगे, अतः अपने फैसिलिटेटर के सम्पर्क में रहें तथा उनके द्वारा दिये गये सुझावों से लाभान्वित हों।

प्रयोजन (Purpose) -

शोध परियोजना को कर्मकाण्ड के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने का मर्म यह है कि शिक्षार्थियों को भारतीय कर्मकाण्ड की संकल्पनाओं एवं इसके विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया जा सके। जिससे आप कर्मकाण्ड के विभिन्न आयामों से परिचित हो सकेगें। यहाँ पर आपकी सुविधा कहना प्रासंगिक होगा कि आप जिस विषय में भविष्य में विशेषज्ञता प्राप्त करना चाहते है, उस विषय का चयन कर सकते हैं। कर्मकाण्ड के अपने यह पाठ्यक्रम में आप कर्मकाण्ड के विभिन्न विषयों एवं क्षेत्रों से परिचित अवश्य हो गये होंगे, जो कर्मकाण्ड की पृष्ठभूमि से सम्बन्धित है। आज के परिप्रेक्ष्य में आप कर्मकाण्ड का वर्तमान में प्रासंगिकता एवं समासामयिक विषयों पर भी शोध परियोजना कार्य कर सकते हैं।

उद्देश्य (Objectives) शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य

(Main Objectives of Dissertation)

1. ज्ञान की सीमा का विस्तार करनाः

- ❖ कर्मकाण्ड के विभिन्न पक्षों पर नया ज्ञान उत्पन्न करना,
- ❖ पूर्व से अज्ञात तथ्यों, विचारों, या व्याख्याओं को खोजना और प्रस्तुत करना,
- ❖ शास्त्रों के सिद्धांतों को विकसित करना या उनकी पुनः व्याख्या करना,
- ❖ भारतीय कर्मकाण्ड से संबंधित समस्याओं की पहचान करना और उनका समाधान प्रस्तुत करना,
- ❖ कर्मकाण्ड के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मूल्यों की गहरी समझ प्रदान करना। व्यापक ऐतिहासिक प्रसंगों के महत्व को समझना।
- ❖ भारतीय ज्ञान परम्परा के व्यापक अनुसंधान से कर्मकाण्ड को जोड़ना।

2. वैज्ञानिक पद्धति का निर्धारण और प्रशिक्षण करनाः

- ❖ मौलिक स्रोतों जैसे मौखिक साक्ष्यों, पाण्डुलिपियों, और दृश्य सामग्रियों के उपयोग में छात्रों को प्रशिक्षित करना।
- ❖ ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए डिजिटल और गैर-डिजिटल उपकरणों की जानकारी और उसमें प्रवीणता हासिल करना।

3. आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करनाः

- ❖ स्मृति, ऐतिहासिक कथानकों में पूर्वाग्रह की भूमिका का विश्लेषण करना।
- ❖ यह समझना कि ऐतिहासिक निरूपण जटिल होता है, और यह कौन तय करता है और क्यों।

4. नवाचार को बढ़ावा देनाः

- ❖ कर्मकाण्ड को प्रस्तुत करने के रचनात्मक तरीकों को प्रोत्साहित करना, जैसे कि डिजिटल सेवाओं का कर्मकाण्ड विधि में प्रयोग करना और मल्टीमीडिया के माध्यम से अंतर्विषयक सम्बंध के विषय में पता लगाना।

शोध प्रबन्ध के विशेष उद्देश्य)Special Objectives of Dissertation)

- शोध समस्या का निर्माण करना सीखना।
- मौलिक एवं उच्चतम नवीन तथ्यों का उद्घाटन
- किसी निर्माण को निश्चित करना
- मानवीय चिंतन की प्रवृत्ति का विकास और परिष्कार
- अज्ञात सत्य की खोज करना
- भौतिक और मानसिक कल्याण
- विशिष्ट ज्ञानप्राप्ति और ज्ञानक्षेत्र की सीमा का विस्तार
- विश्रृंखलित तत्वों का संयोजन
- समस्याओं का समाधान
- अनुपलब्ध तथ्यों का अन्वेषण
- उपलब्ध तथ्यों और सिद्धांतों की पुनःस्थापना
- मौलिकता का प्रतिपादन वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरणा
- गहन साहित्य सर्वेक्षण द्वारा शोध हेतु उपयुक्त विषय का चुनाव करना।
- परिकल्पना का निर्माण करने की प्रक्रिया से अवगत होना।
- शोध-प्रारुप निर्माण की प्रक्रिया को जानना। निदर्शन प्रारूप निर्धारण को समझाना।
- आँकड़ा संकलन की विधि से अवगत होना।
- प्रोजेक्ट का सम्पादन करना सीखना।
- आँकड़ों का विश्लेषण करने का ज्ञान अर्जित करना।
- परिकल्पनाओं का परीक्षण सीखना।
- सामान्यीकरण और विवेचन और रिपोर्ट तैयार करना या परिणामों का प्रस्तुतीकरण यानि निष्कर्षों का औपचारिक लेखन लिखने की कला को सीखना।

परियोजना कार्य से आशय

रिसर्च प्रोजेक्ट एक अप्रत्यक्ष/परोक्ष रूप में, एवं सक्रिय कार्य करने की एक विधि है। जो संगठित रूप से एक विषय के बारे में क्रमबद्ध, विस्तृत एवं नयी जानकारी प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान करती है। कर्मकाण्ड में शोध परियोजना कार्य अध्ययन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि यह व्याख्यान और पाठ्यपुस्तक-आधारित अध्ययन के पारंपरिक तरीकों से परे जाकर विषय में सक्रिय रूप से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। यह छात्रों को महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने, ऐतिहासिक अध्ययन को वास्तविक जीवन के संदर्भों से जोड़ने, और विषय के साथ गहरे स्तर पर जुड़ने में मदद करता है। यहाँ कर्मकाण्ड में रिसर्च प्रोजेक्ट कार्य के महत्व को विस्तार से समझाया गया। है:

1. सक्रिय शिक्षा और आलोचनात्मक सोच

- **व्यावहारिक अनुभव**: रिसर्च प्रोजेक्ट कार्य छात्रों को ऐतिहासिक अनुसंधान प्रक्रिया में संलग्न करता है, जिसमें स्रोतों का पता लगाना, डेटा का विश्लेषण करना और साक्ष्यों की व्याख्या करना शामिल है।
- **सर्व-स्वीकृत आख्यानों पर सवाल उठाना:** छात्र स्थापित ऐतिहासिक दृष्टांतों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना सीखते हैं, पक्षपात या पूर्वाग्रह की पहचान करते हैं।
- **समस्या समाधान कौशल:** वास्तविक चुनौतियों पर विचार के दौरान छात्र समस्याओं का समाधान करना और साक्ष्य के आधार पर तार्किक निष्कर्ष निकालना सीखते हैं।

2. सिद्धांत को व्यावहारिकता से जोड़ना

- **ऐतिहासिक विधियों का उपयोग**: परियोजना कार्य छात्रों को कक्षा में सीखे गए अवधारणाओं और सिद्धांतों, व्यावहारिक अनुसंधान में लागू करने में मदद करता है।
- **कर्मकाण्ड की प्रासंगिकता समझना** : कर्मकाण्ड का भारतीय वैदिक वांगमय में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। यह हमारे प्राचीन ऋषियों की देन है। कर्मकाण्ड का अध्ययन आज भी ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल एवं मानव जीवन को विकसित करने में सहायक है, साथ ही यह भारतीय प्राचीन संस्कृति और परम्परा को भी बढ़ावा देती है।

3. अनुसंधान कौशल का विकास

- **मूल स्रोतों से जुड़ाव:** छात्र प्राथमिक स्रोतों के साथ काम करना सीखते हैं, जिससे उनकी अनुसंधान क्षमताओं में सुधार होता है।
- **कार्यप्रणाली में प्रशिक्षण:** शोध परियोजना कार्य छात्रों को ऐतिहासिक तरीकों जैसे तुलना, कालक्रम, और सन्दर्भीकरण/सामान्यीकरण में प्रशिक्षित करता है।
- **डिजिटल साक्षरता:** कर्मकाण्ड में अनुसंधान कौशल का विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें कर्मकाण्ड के मूल स्रोत वेदों से संबंधित विभिन्न विषयों का गहन अध्ययन शामिल है। इसके लिए Structured learning, practical application, और scholarly engagement का संयोजन आवश्यक है।

• **अनुसंधानात्मक विधियों:** वैदिक साहित्य और कर्मकाण्ड में अनुसंधान के लिए उपयुक्त विधियों का ज्ञान होना चाहिए, जैसे कि textual criticism, comparative linguistics, 3 historical linguistics.

4. संचार कौशल को बढ़ावा देना

- **प्रस्तुति और लेखन:** कर्मकण्ड विषय से संबंधित विभिन्न प्रदर्शनियों, या मल्टीमीडिया आउटपुट के माध्यम से, छात्र जटिल विचारों को स्पष्ट और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत करना सीखते हैं।
- **सहयोगात्मक कार्य**: रिसर्च प्रोजेक्ट टीमवर्क और संचार कौशल को बढ़ावा देती हैं क्योंकि छात्र सामूहिक अनुसंधान उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करते हैं।
  सामुदायिक जुड़ाव: कर्मकाण्ड का सम्बन्ध मानवमात्र से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है, इसलिए इस विषय पर शोध परियोजना कार्य करने से स्पष्ट रूप से सामुदायिक जुड़ाव सम्भव है।

5. रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करना

- **रचनात्मक प्रस्तुतियाँ :** कर्मकाण्ड में रिसर्च प्रोजेक्ट प्राय: अभिनव प्रस्तुतियों, जैसे डॉक्यूमेंट्री, डिजिटल रूप में विषय प्रस्तुति, या संग्रहालय प्रदर्शनियों को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे छात्रों की रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है। कर्मकाण्ड में रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए कई तरीके हैं, जैसे कि डिजिटल माध्यमों का उपयोग, नवीन शिक्षण विधियों का विकास, और कर्मकाण्ड में अन्य नए विषयों को शामिल करना। रचनात्मकता और नवाचार, कर्मकाण्ड को अधिक आकर्षक और प्रासंगिक बनाने में मदद कर सकते हैं।
- **अंतर्विषयक संबंध:** छात्र अपने विषय विश्लेषण को समृद्ध करने के लिए वेद, कर्मकाण्ड, ज्योतिष, पौरोहित्य या कला जैसे अन्य विषयों के दृष्टिकोणों को शामिल कर सकते हैं। समकालीन विषयों पर ज्योतिष में लेखन को प्रोत्साहित करना। विभिन्न वैदिक ग्रंथों का आधुनिक संदर्भों में अनुवाद और व्याख्या करना। कर्मकाण्ड में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित कर सकते हैं।

6. भविष्य के करियर के लिए तैयारी करना

कौशल विकास :अनुसंधान, आलोचनात्मक सोच, संचार, और डिजिटल साक्षरता के कौशल जो कर्मकाण्ड में प्रोजेक्ट के माध्यम से विकसित होते हैं, अकादमिक, सार्वजनिक नीति, शिक्षक, पुरोहित, ज्योतिषी, और धार्मिक संस्थानों और अन्य क्षेत्रों में करियर के लिए मूल्यवान हैं।

पोर्टफोलियो निर्माण :रिसर्च प्रोजेक्ट कार्य ठोस आउटपुट तैयार करता है, जिसे छात्र नौकरियों, छात्रवृत्तियों, या स्नातक कार्यक्रमों के लिए आवेदन में प्रस्तुत कर सकते हैं।

7. कर्मकाण्ड को व्यक्तिगत और प्रासंगिक बनाना

- कर्मकाण्ड को व्यक्तिगत और प्रासंगिक बनाने के लिए, इसे दैनन्दिन जीवन में शामिल करना, आधुनिक संदर्भों से जोड़ना, और इसके लाभों को उजागर करना आवश्यक है।
- **भूतकाल और वर्तमान को जोड़ना:** छात्र यह समझने में सक्षम होते हैं कि ऐतिहासिक घटनाएँ वर्तमान सामाजिक,राजनीतिक, और सांस्कृतिक संदर्भों को कैसे आकार देती हैं।
- **कर्मकाण्ड के आधुनिक उपयोगों को उजागर करना**: कर्मकाण्ड को कंप्यूटर विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, और अन्य आधुनिक क्षेत्रों में उपयोग के लिए प्रासंगिक बताया गया है। इन उपयोगों को उजागर करना।
- **कर्मकाण्ड के नैतिक और दार्शनिक विचारों को वर्तमान संदर्भ में लागू करना :**कर्मकाण्ड में मानव जीवन को शास्त्रानुरूप उत्तम बनाने के लिए बहुत कुछ लिखा गया है। इन विचारों को आज के समाज में प्रासंगिक बनाने के तरीकों पर चर्चा करना।
- **कर्मकाण्ड को भारतीय संस्कृति और विरासत से जोड़ें रखना**: कर्मकाण्ड सर्वविद्यामूलक वेद का अंग है। कर्मकाण्ड को भारतीय संस्कृति के अन्य पहलुओं से जोड़कर, इसे अधिक प्रासंगिक बनाया जा सकता है।
- **कर्मकाण्ड को सार्वकालिक बढ़ावा देना :**कर्मकाण्ड वैदिक काल से मानवजीवन को उपकृत करते आ रहा है। इसलिए आज के समय में भी इसकी महत्ता यथावत् है। इसके गूढ़ और रहस्यमयी तत्वों पर अनुसन्धान करके मानवजीवन को सार्वकालिक सरल, सुलभ और कल्याणकारी बनाया जा सकता है।

मुख्य अवधारणाएँ-

शोध के भेद -उद्देश्य, कला और प्रयोग

उद्देश्य सिद्धांत निर्माण, व्यावहारिक अनुप्रयोग।

वेद, - संहिता ग्रन्थ, पुराण

शास्त्ररूप, ऐतिहाससिक पक्ष/ वेदांग

वैदिक यज्ञ क्रियाओं से संबंधित विषयों का अनुसन्धान

वैदिक कर्मकाण्ड, यज्ञ, धर्मादि कर्म विधि, पूजन-पाठ, मन्त्रानुसन्धान

शोध संबंधित साहित्य सामग्री संग्रह, हस्तलिखित।

शोध के विविध क्षेत्र -वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, संहिता ग्रन्थ, कर्मकाण्ड से संबंधित विविध कर्म

विशिष्ट साहित्य विधा - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद

विविध साहित्य संप्रदायउद्भव -, विकास, उद्भव के कारण, प्रभाव, प्रवर्तक, समर्थक, विशेषता परिस्थितियों का प्रभाव।

शोध विधि- सूत्र, व्युत्पत्ति, आत्मोक्ति विधि, प्रयोजन विधि, प्रतिगमन विधि, व्याख्यात्मक विधि, गणितीय विधि, संकलन विधि तथा तुलनात्मक विधि। आमतौर पर ऐसे विषय का चयन किया जाता है, जिस पर पूर्व में अधिक अध्ययन न किया गया

हो अथवा ऐसी समस्या का चुनाव करें जिस पर पूर्व में अध्ययन तो हुआ हो परन्तु उस विषय में शोध का उद्देश्य भिन्न हो अथवा समस्या का स्वरूप परिवर्तित हो।

शोध परियोजना प्रस्ताव कार्य कब प्रारम्भ किया जाएगा)When Dissertation/Dissertation will begin)

- अपनी रूचि के शोध विषय Research Topic) का चयन करें।
- अपने शैक्षिक फैसिलिटेटर से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा।
- फैसिलिटेटर से संस्तुति प्राप्त करें।
- अध्ययन करना। Conducting the Study)
- प्रतिवेदन तैयार करना।
- अपने प्रर्यवेक्षक से समय-समय पर सलाह एवं मार्गदर्शन प्राप्त करें।
- **विषय /शीर्षक का चुनाव एवं फैसिलिटेटर की सहमति प्राप्त करना)Selection of Topic and Facilitator's consent)**

किसी भी शोध को करने का प्रथम सोपान विषय का चयन होता है। अपनी रूचि के विषय को चुनते समय अपने पाठ्यक्रम की। विषयवस्तु को ध्यान में रखें। ताकि आप अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय का चयन कर सकें। इसके अतिरिक्त विषय की उपयुक्तता, प्रासंगिकता, विषय से संबधित अध्ययन सामग्री, समय सीमा एवं व्यय आदि बातों का ध्यान रखें। तथ्यों के संग्रहण हेतु स्थान का चयन भी विशेष महत्व रखता है जिससे आपकी समय एवं धन का अपव्यय न हो। आप अपनी सुविधानुसार शीर्षक का का चयन कर सकते है।

शोध से सम्बन्धित विषय)Topics related to Research)

किसी भी शोध कार्य को करने की प्रथम सीढ़ी विषय चयन की होती है अतः शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि अपनी रूचि का। विषय चुनते समय अपने पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का भी ध्यान रखें ताकि आप अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय का चयन कर सकें। इसके अतिरिक्त आपको विषय की उपयुक्तता, प्रासंगिकता, विषय की अध्ययन सामग्री, समय सीमा के साथ-साथ शोध कार्य में व्यय होने वाली धनराशि पर भी ध्यान देना चाहिए। कर्मकाण्ड में रिसर्च प्रोजेक्ट के लिए सही विषय चुनना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह आपके शोध की दिशा, गहराई और आपकी रुचि को निर्धारित करता है। यहां एक प्रभावी और आकर्षक विषय चुनने के लिए चरण और सुझाव दिए गए हैं:

1. अपनी शोध प्रोजेक्ट की सीमा और उद्देश्य को समझें

पाठ्यक्रम आवश्यकताएँ: सुनिश्चित करें कि आपका विषय पाठ्यक्रम या रिसर्च प्रोजेक्ट के दिशानिर्देशों के अनुरूप हो। देखें कि क्या कोई विशिष्ट विषय, समय अवधि, या क्षेत्र शामिल है।

शोध परियोजना का उद्देश्यः कर्मकाण्ड के ज्ञान द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा को आगे बढ़ाना और छात्रों को इन क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल करने में मदद करना। इसके अतिरिक्त, यह प्राचीन ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में समझने और उसकी प्रासंगिकता स्थापित करने का भी प्रयास करना है।

2. अपनी रुचियों पर विचार करें

- **व्यक्तिगत जिज्ञासा**: ऐसा विषय चुनें जिसमें आप वास्तव में रुचि रखते हों। एक ऐसा विषय जिसे आप आकर्षक पाते हैं, वह आपको शोध प्रक्रिया के दौरान प्रेरित रखेगा।
- **समसामयिक घटनाओं से जुड़ाव:** ऐसे ऐतिहासिक विषयों का पता लगाएं जो वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, या सांस्कृतिक मुद्दों से जुड़े हों, ताकि संस्कृत की प्रासंगिकता स्पष्ट हो सके।

3. उपलब्ध स्रोतों का पता लगाएँ

- प्राथमिक स्रोतः
- कर्मकाण्ड में कई अन्य ग्रंथ, जैसे कि आह्निक सूत्रावली, कर्मठगुरु, ग्रहशान्ति, निरूक्त, अमरकोष, कर्मसमुच्चय, आदि है।
- इन स्रोतों के अलावा, कर्मकाण्ड में कई अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ भी उपलब्ध हैं, जैसे कि पारस्करगृह्यसूत्र, सर्वदेवपूजाविधि, धर्मशास्त्र का इतिहास, संस्कार दीपक, वैदिक साहित्य का इतिहास, व्रतानुष्ठानविधि, नित्यकर्मपूजाप्रकाश, रूद्राष्टाध्यायी, दुर्गाचन पद्धति, प्रेतमंजरी, दानमयूख, प्रतिष्ठामयूख, याज्ञवल्क्यस्मृति।
- इन स्रोतों के अध्ययन से कर्मकण्ड के विकास, भारतीय शास्त्रों की परम्परा और इतिहास तथा दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है.
- कर्मकाण्ड के कई महत्वपूर्ण स्रोत उपलब्ध हैं, जिनमें वेद, उपनिषद, पुराण तथा अन्य साहित्यिक स्रोत शामिल हैंइन . स्रोतों से न केवल कर्मकाण्ड का साहित्य, बल्कि भारतीय संस्कृति और प्राचीनकालीन इतिहास के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है.
- माध्यमिक स्रोत: सुनिश्चित करें कि पृष्ठभूमि जानकारी और विश्लेषण के लिए पर्याप्त विद्वतापूर्ण कार्य उपलब्ध हैं।
- स्थानीय संसाधनः स्थानीय पुस्तकालयों, संग्रहालयों और ऐतिहासिक समाजों का उपयोग करें ताकि अपने विषय से संबंधित अनूठी सामग्री प्राप्त की जा सके।

4. विषय के महत्व पर विचार करें

- मौलिकता: एक अनूठा दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास करें या एक ऐसा विषय चुनें जिसे बहुत अधिक अध्ययन नहीं किया गया है।
- प्रासंगिकता: ऐसा विषय चुनें जिसके व्यापक प्रभाव हों या जो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सन्दर्भ से संबंधित हो।
- प्रभावः यह सोचें कि आपकी डिज़र्टेशन किसी ऐतिहासिक अवधि, घटना, या समुदाय की समझ में कैसे योगदान दे सकती है।

5 शिक्षकों और सहपाठियों से चर्चा करें

- मार्गदर्शन प्राप्त करें: अपने विचारों को शिक्षकों, सलाहकारों, या सहपाठियों के साथ साझा करें ताकि विषय को परिष्कृत किया जा सके।
- सहयोगात्मक इनपुट: सहपाठियों के साथ चर्चा से नए विचार प्राप्त हो सकते हैं या आपके चुने हुए विषय में संभावित चुनौतियों की पहचान हो सकती है।

6 एक ऐसा विषय चुनें जो आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करे

- बहस और विवाद: ऐसे विषयों का चयन करें जो ऐतिहासिक बहसों या विपरीत दृष्टिकोणों को शामिल करते हों (जैसे, क्रांति के कारण या किसी ऐतिहासिक व्यक्तित्व की व्याख्या)।
- अंतर-संबंधित विषय: यह विचार करें कि कैसे विभिन्न विषय, जैसे लिंग, वर्ग, जाति, या प्रौद्योगिकी, ऐतिहासिक ढांचे के भीतर एक-दूसरे से जुड़े हैं।

B. बी. ए. के. ए. (एन)-331 पंचम सेमेस्टर के शिक्षार्थियों हेतु शोध परियोजना के शीर्षक-

1. दैनन्दिनी कर्म परिचय, सन्ध्या पूजन, पूजन क्रम विधि।
2. वेद।
3. पुराण।
4. उपनिषद।
5. पंचमहायज्ञ।
6. संस्कार परिचय।
7. कलशादि पूजन।
8. नवग्रह मण्डल।
9. विविध स्तोत्र पाठादि विवेचन। यथा- श्रीसूक्त, रूद्र सूक्त, पुरूष सूक्त, आदित्यहृदयस्तोत्र, अन्नपूर्णा स्तोत्र, रामरक्षास्तोत्र, विष्णुसहस्रनाम, सूर्यसूक्त।
10. अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, पंचलोकपाल, दशदिक्पाल, क्षेत्रपाल, हवन एवं पूर्णाहूति।

शोध परियोजना प्रस्ताव)Research Project Proposal)

आपका परियोजना प्रस्ताव 8-10 पन्नों का होना चाहिये। यह प्रत्ययात्मक रूपरेखा (Conceptual framework) का होना चाहिये। जो समस्या की प्रकृति को दर्शाते हुये होना चाहिये। जिसमें समस्या का चयन उद्देश्य, उपकल्पना, समग्र एवं विनिदर्शन का विवरण होना चाहिए। आंकड़ा-संग्रह की विधियाँ, सारणीयन एवं अध्यायीकरण को सम्मिलित किया जाना चाहिये। समाज वैज्ञानिक होने के नाते आप से अपेक्षा की जाती है कि आप सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियों का प्रयोग करते हुये नये ज्ञान की खोज एवं पुराने ज्ञान के सत्यापन का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

शोध परियोजना प्रस्ताव लिखने हेतु प्रारूप)Proposal format to write dissertations)

• **शीर्षक का चुनाव (Selection of Topic)** - सर्वप्रथम रिसर्च प्रोजेक्ट प्रस्ताव बनाने हेतु एक शोध शीर्षक का चुनाव करना चाहिए।

• **परिकल्पना का निर्माण (Formation of Hypothesis)** - शोध प्रोजेक्ट हेतु समस्या के आधार पर परिकल्पना / प्रकल्पना का निर्माण करना चाहिए। जैसे : "भारत में स्थानीय देवताओं की पूजा प्रथाओं ने पवित्र स्थलों और पर्यावरण संरक्षण के नियमों की स्थापना करके ऐतिहासिक रूप से जंगलों, जल स्रोतों और जैव विविधता के संरक्षण में योगदान दिया है।"

• **अध्ययन की उपयुक्तता** –अध्ययन का शीर्षक क्यों चुना गया तथा इसकी उपयोगिता क्या है के बारे में स्पष्ट ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहिए।

• **अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)** - अध्ययन के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से लिखा जाना चाहिए कि उक्त अध्ययन को किये जाने के पीछ आपका उद्देश्य क्या है तथा आप इस अध्ययन को किन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु करना चाहते है।

• **अध्ययन हेतु प्रयोग प्रविधि (Methodology for Study)** - प्रस्तुत शोध अध्ययन में कौनकौन- सी शोध प्रविधियों का प्रयोग करेगें। यहाँ पर आपको उन प्रयोग की जाने वाली विधियों का स्पष्ट एंव विस्तार से वर्णन करना होगा।

• **शोध अभिकल्पना (Research Design)** - शोध प्रविधि में कौन सी शोध प्ररचना का प्रयोग करेगें। जो आपके शोध कार्य की प्रकृति एंव उददेश्यों को फलीभूत करेगें उसके बारे में चर्चा करना चाहिए एवं परिभाषा देनी चाहिए।

• **तथ्य एकत्रित करने की तकनीक (Techniques of Data Collection)** - शोध अध्ययन में तथ्य एकत्रित करने हेतु दो विधियों का प्रयोग करते हैं।

• **प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने की विधि (Primary methods of data collection)** प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने हेतु कई विधियों का प्रयोग करते हैं। जिनमें कुछ अग्रलिखित है -

1.अवलोकन
2.संग्रहालय
3.अभिलेखागार
4.प्रश्नावली
5.अनुसूची
6.साक्षात्कार
7. वैयक्तिक अध्ययन

द्वितीयक तथ्य एकत्रित करने की विधि Method's of Secondary data collection: द्वितीयक तथ्य वे तथ्य होते है जो विभिन्न किताब, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों इत्यादि के माध्यम से एकत्रित किये जाते है इनका स्पष्ट निरूपण होना चाहिए।

• सारिणीकरण, तथ्य विश्लेषण व्याख्या एवं प्रतिवेदन Tabulation, interpretation and Report Writing- शोध प्रबन्ध प्रस्ताव में स्पष्ट रूप से वर्णन करना चाहिए कि शोध अध्ययन में किस प्रकार की सारिणी का प्रयोग करेगें तथ्यों का कैसे विश्लेषण करेगें उनकी व्याख्या कैसे करेगें तथा उनका प्रतिवेदन करेगें।

• **शोध अध्ययन का अध्यायीकरण (Chapterisation of research Study)** - इस शीर्षक के अन्तर्गत शोध प्रबन्ध में कौन-कौन से अध्याय होगें तथा उन अध्यायों में कौन-कौन से तथ्य होगें का वर्णन करना चाहिए।

इस प्रकार उपरोक्त शीर्षकों के अन्तर्गत शोध प्रबन्ध प्रस्ताव तैयार कर पर्यवेक्षक को प्रस्तुत करना चाहिए तथा पर्यवेक्षक के अनुमोदन के पश्चात अपना शोध कार्य शुरू करना चाहिए।

शोध प्रबन्ध हेतु प्रारूप (Outline of Research Project) शोध प्रबन्ध लिखने के लिए सबसे पहले आवश्यक होता है कि अध्यायीकरण के अनुसार प्रतिवेदन किया जाए।इस प्रकार शोध प्रबन्ध तैयार करने हेतु अग्रलिखित शीर्षक दिये जा रहे है-

प्रस्तावना Introduction- इसमें शोध अध्ययन शीर्षक से सम्बन्धित तथ्यों को विस्तृत रूप से लिखना चाहिए तथा जो साहित्य जहां से लिये गये है उनका भी सन्दर्भ सूची में वर्णन करना चाहिए।

शोध अध्ययन की उपयुक्तता व उद्देश्य (Objectives and relevance of research study) - इसमें शोध अध्ययन की उपयुक्तता तथा उद्देश्यों का स्पष्ट रूप से वर्णन करना चाहिए।

साहित्य का पुनरावलोकन (Review of literature) - शोध अध्ययन का प्रतिवेदन करने में साहित्य पुनरावलोकन का महत्वपूर्ण स्थान है अतः शोध अध्ययन प्रतिवेदन में पूर्व में हुए अध्ययनों का वर्णन सांख्यिकीय तथ्यों के साथ करना चाहिए।

ऐतिहासिक स्रोतों की प्रामाणिकता, सत्यापन, तिथिक्रम, वर्तमान संदर्भ (Authenticity, Verification, Chronology, and Current Context of Historical Sources) कर्मकाण्ड का अध्ययन करते समय, यह आवश्यक है कि हम स्रोतों का मूल्यांकन विभिन्न स्तरों पर करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे शोध के लिए विश्वसनीय और सटीक आधार प्रदान करते हैं। चार मुख्य पहलू जिन पर ध्यान देना आवश्यक है, वे हैं: प्रामाणिकता, सत्यापन, कालक्रम, और उनका वर्तमान संदर्भी प्रामाणिकता का अर्थ है यह निर्धारित करना कि कोई ऐतिहासिक स्रोत वास्तविक है और नकली, बदला हुआ, या गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है। सत्यापन का मतलब स्रोत की सामग्री की सटीकता, विश्वसनीयता, और प्रामाणिकता का आकलन करना है। यह दैवज्ञों के तथ्यों और पूर्वाग्रहों, अतिशयोक्ति, या गलतियों के बीच अंतर करने में मदद करता है। यह सुनिश्चित करता है कि व्याख्याएँ साक्ष्यों पर आधारित हैं, न कि केवल धारणाओं परासत्यापन के तरीके हैं:

पारस्परिक संदर्भ (Cross-Referencing): स्रोत को अन्य समकालीन स्रोतों से तुलना करें ताकि सुसंगतता सुनिश्चित की जा सके; लेखक का उद्देश्य (Authorial Intent): यह समझें कि लेखक का उद्देश्य और संभावित पूर्वाग्रह (जैसे, प्रचार, व्यक्तिगत उद्देश्य) क्या हो सकता **है;** तथ्य- जांच (Fact-Checking): स्रोत में किए गए दावों की पुष्टि स्थापित ऐतिहासिक तथ्यों या घटनाओं से करें;

शोध प्रविधि (Research method) - शोध अध्ययन प्रतिवेदन में विस्तृत रूप से शोध प्रविधि का वर्णन करना चाहिए। जिसमें शोध प्ररचना शोध निदर्शन तथा तथ्यों के एकत्रीकरण के बारे में भी वर्णन करना चाहिए।

अभिलेखीय अनुसंधान:

- शिक्षार्थियों को स्थानीय अभिलेखागार, पुस्तकालयों, और संग्रहालयों में ऐतिहासिक रिकॉर्ड और व्यक्तिगत पत्राचार का पता लगाना चाहिए।
- प्राथमिक स्रोतों के विश्लेषण और व्याख्या में शिक्षार्थियों को प्रशिक्षित होने के साथ ही, उनके संदर्भ, उद्देश्य, और सीमाओं को समझना चाहिए।

मौखिक कर्मकाण्ड :

शिक्षार्थियों को मौखिक साक्षात्कार तकनीकों में प्रशिक्षित होना चाहिए, जिसमें प्रश्न तैयार करना, रिकॉर्डिंग करना, और कर्मकाण्ड के मूल ग्रन्थों का अनुवाद शामिल है। हाशिए पर पड़े या अलिखित समूहों के दृष्टिकोणों को पकड़ने में मौखिक कर्मकाण्ड के महत्व पर जोर देना चाहिए। क्षेत्र कार्य और मानचित्रण: शिक्षार्थियों को स्थानीय स्थलों, पड़ोस, या सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा के लिए तैयार होना चाहिए। अपनी टिप्पणियों को क्षेत्र नोट्स, रेखाचित्र, तस्वीरें, और GIS मानचित्रण उपकरणों के माध्यम से प्रलेखित करने का प्रयास करना चाहिए।

ज्योतिष में डिजिटल उपकरण

- छात्रों को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म जैसे Story Map, ArcGIS, Canva, या वीडियो संपादन सॉफ्टवेयर का उपयोग करना सीखना चाहिए।
- डिजिटल अभिलेखागार, पॉडकास्ट, या ऑनलाइन प्रदर्शनियों जैसे रचनात्मक आउटपुट को प्रोत्साहित करना चाहिए।

सामुदायिक सहयोग:

स्थानीय ऐतिहासिक संगठनों, सांस्कृतिक समूहों, या निवासियों के साथ साझेदारी की सुविधा देना।
सामुदायिक-आधारित अनुसंधान के नैतिक पहलुओं को उजागर करना, यह सुनिश्चित करते हुए कि सम्मान और लाभ पारस्परिक हो।

उत्तरदाताओं का पृष्ठभूमि Profile of respondents -इस अध्याय में उत्तरदाताओं से सम्बन्धित उन सभी तथ्यों का वर्णन करना चाहिए जो उनकी आर्थिक, सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित हो।
निष्कर्ष Conclusion इसके अन्तर्गत शोध अध्ययन में महत्वपूर्ण तथ्यों को दिया जाना चाहिए जिससे शोध अध्ययन की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की जानी चाहिये।
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची)Bibliography References) -
शोध प्रबन्ध में जो भी तथ्य द्वितीयक स्रोतों से लिये जाते है उनका विवरण सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में देना चाहिए।
शिक्षार्थियों की सहायता हेतु यहाँ शोध से सम्बन्धित विभिन्न चरणों की व्याख्या की जा रही है।
आइए, एक ऐतिहासिक डिज़र्टेशनकार्य के विभिन्न चरणों को समझें:
1. विषय का चयन:
रुचि: ऐसे विषय का चयन करें जिसमें आपकी वास्तविक रुचि हो। इससे आपको पूरे शोध प्रक्रिया में प्रेरित रहने में मदद

मिलेगी।

क्षेत्र: सुनिश्चित करें कि विषय दिए गए समय सीमा और संसाधनों के भीतर प्रबंधनीय है। बहुत व्यापक या संकीर्ण विषयों से बचें।

स्रोत उपलब्धता: अपने विषय से संबंधित प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों की उपलब्धता पर विचार करें।

शोध प्रश्नः एक स्पष्ट और केंद्रित शोध प्रश्न तैयार करें जिसका उत्तर आपकी डिज़र्टेशन देगी।

2. साहित्य समीक्षा:

पृष्ठभूमि अनुसंधान :सामान्य पाठ्य और संदर्भ सामग्री के माध्यम से अपने विषय की बुनियादी समझ प्राप्त करें।

मुख्य स्रोतों की पहचान: पुस्तकों, लेखों, दस्तावेजों और ऑनलाइन डेटाबेस जैसे प्रासंगिक प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का पता लगाएं।

महत्वपूर्ण विश्लेषण: विश्वसनीयता, प्रासंगिकता और पूर्वाग्रह के लिए स्रोतों का मूल्यांकन करें।

सूचना का संश्लेषण: विषय की एक सुसंगत समझ बनाने के लिए विभिन्न स्रोतों से जानकारी को व्यवस्थित और व्याख्या करें।

3. परिकल्पना का निर्माण (वैकल्पिक):

शिक्षित अनुमान: आपके द्वारा अध्ययन किए जा रहे ऐतिहासिक घटना या घटना के बारे में एक अस्थायी व्याख्या या भविष्यवाणी विकसित करें।

परीक्षण योग्य: सुनिश्चित करें कि आपकी परिकल्पना परीक्षण योग्य है और साक्ष्य द्वारा समर्थित या खंडित की जा सकती है।

4. शोध पद्धति:

ऐतिहासिक विधि: स्रोत आलोचना, कालक्रम और संदर्भ विश्लेषण जैसी तकनीकों का उपयोग करें।

डेटा संग्रह: प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से प्रासंगिक डेटा एकत्र करें।

डेटा विश्लेषण: अर्थपूर्ण निष्कर्ष निकालने के लिए एकत्रित डेटा की व्याख्या और विश्लेषण करें।

5. लेखन प्रक्रिया:

सुनिश्चित स्वरूप: अपने पेपर को एक स्पष्ट परिचय, मुख्य भाग और निष्कर्ष के साथ संरचित करें।

तर्क: एक मजबूत थीसिस स्टेटमेंट विकसित करें और इसे अपने शोध के साक्ष्य के साथ समर्थन दें।

उद्धरण: स्रोतों को श्रेय देने के लिए उचित उद्धरण शैलियों (जैसे APA, MLA, शिकागो) का उपयोग करें (वैकल्पिक)।स्पष्टता और सुसंगतता: स्पष्ट और संक्षिप्त लिखें, विचारों को सुचारू रूप से जोड़ने के लिए संक्रमण का उपयोग करें।

6. निष्कर्ष:

निष्कर्षों का सारांश: अपनी थीसिस को दोहराएं और अपने तर्क के मुख्य बिंदुओं का सारांश दें।

परिणामों की व्याख्या: अपने निष्कर्षों के महत्व की व्याख्या करें और बताएं कि वे ऐतिहासिक विषय की समझ में कैसे योगदान करते हैं।

सीमाएँ और भविष्य के अनुसंधानः अपने शोध की किसी भी सीमा को स्वीकार करें और आगे की जांच के लिए संभावित क्षेत्रों का सुझाव दें।

अतिरिक्त बिंदुः

• समय प्रबंधन: अपने शोध और लेखन को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए एक यथार्थवादी समयरेखा बनाएं।

. नैतिक विचार: बौद्धिक संपदा अधिकारों का सम्मान करें और चोरी से बचें।

पीयर रिव्यू: अपने काम को बेहतर बनाने के लिए साथियों या सलाहकारों से प्रतिक्रिया लें।

संशोधन और संपादन: स्पष्टता, सुसंगतता और सटीकता के लिए अपने लेखन को परिष्कृत करते रहें। इन चरणों का पालन करके और विवरण पर ध्यान देकर, आप एक उच्च-गुणवत्ता वाली ऐतिहासिक शोध परियोजना तैयार कर सकते हैं

(हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों के शिक्षार्थियों लिए मुख्यपृष्ठ का प्रारूप)

(Format of front page for both Hindi and English medium learners)

शोध परियोजना का शीर्षक

(Title of the research project)

(चयनित अध्ययन क्षेत्र का नाम)

(Name of the selected study area)

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के

BA-23 पचंम सेमेस्टर BAKA(N)-331 की

आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

(Submitted for partial fulfilment of BA-23 fifth semester BAKA(N)-331 of Uttarakhand Open University

शोध परियोजना

(Research Project)

वर्ष / सत्र

(Year/Session)

शोध पर्यवेक्षक (Research Supervisor)

नाम (Name) -

पदनाम, विभाग Designation, Department)

विश्वविद्यालय/महाविद्यालय का नाम एवं पता-

(Name and address of University/College

शोधार्थी (Researcher)

नाम (Name) -

नामांकन संख्या- (Enrolment No)-

<u>अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता</u>

(Name and address of the study centre)

(हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों के शिक्षार्थियों लिए प्रारूप)

(Format for both Hindi and English medium learners)

Performa for Submission of BA-23 BAKA(N)-331 Research Project Proposal for Approval from Research Supervisor at Study Centre

(अध्ययन केंद्र में शोध पर्यवेक्षक से अनुमोदन के लिए BA-23 बीएकेए (एन)-331 शोध परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत करने का प्रारूप)

नामांकन संख्या: (Enrolment No) :…………………………………………………………………..

परियोजना का शीर्षक (Title of the Project) :……………………..……………………………………

……

जमा करने की तिथि (Date of Submission):……………………………………………………...

अध्ययन केंद्र का नाम (Name of the Study Centre) :……………………………………………..

क्षेत्रीय केंद्र का नाम (Name of the Regional Centre) :……………………………………………

पर्यवेक्षक का नाम (Name of the Supervisor) :...

हस्ताक्षर (Signature)……………………………………………………………………………

शोध पर्यवेक्षक का नाम एवं पता :

(Name & Address of the Research Supervisor)

……

…………………………………………………………………………………………

फोन एवं ईमेल आईडी (Phone No. & Mail Id): ……………………………………………

……………….……………………………………………………………………………………

शिक्षार्थी का नाम व पता (Name & Address of the Student)…………………………………...

………………………………………………………………...

फोन एवं ईमेल आईडी (Phone No. & Mail Id)…………………………………………………

………………………………………………………………………………………………….

स्वीकृत/अस्वीकृत (टिप्पणियों के साथ) (Approved / not approved (with remarks...........................

....

दिनांक (Date)..   स्थान (Place) :.

हिन्दी माध्यम के शिक्षार्थियों लिए प्रारूप

(Format for Hindi Medium Learners)

घोषणा पत्र

मैं एतद् द्वारा घोषणा करता/करती हूँ कि इस शोध परियोजना का शीर्षक ………………………………. ……………………………….. (शीर्षक को बड़े अक्षरों में लिखें) उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) को बीएकेए (एन)- 331 की आंशिक पूर्ति के लिए मेरे द्वारा प्रस्तुत यह पांडुलिपि मेरा अपना मौलिक कार्य है और इसे पहले किसी अन्य संस्थान को अध्ययन के किसी अन्य कार्यक्रम की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है। मैं यह भी घोषणा करता/करती हूं कि इस पांडुलिपि का कोई भी अध्याय पूर्णतः या आंशिक रूप से मेरे या अन्य द्वारा किए गए किसी पूर्व कार्य से नहीं लिया गया है और न ही इस प्रतिवेदन में शामिल किया गया है।

दिनांक : ………………………………..

स्थान :…………………………………….

हस्ताक्षर :…………………………………

नाम:…………………………………………………………………………………………...

पता:…………………………………………………………………………………………
…………………………………………………………………………………………………

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री…………………………………………………………….

………………………………………………….. उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) हल्द्वानी से बी.ए.के.ए. पंचम सेमेस्टर के छात्र BAKA(N)-331 पाठ्यक्रम के लिए अपने प्रोजेक्ट कार्य हेतु मेरे पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन में काम कर रहे थे। इनका प्रोजेक्ट कार्य जिसका शीर्षक…………………………………

....

.... है, इनके द्वारा प्रस्तुत किया गया कार्य वास्तविक और मौलिक कार्य है।

हस्ताक्षर:………………………………………..

नाम:…………………………………………..

पता:……………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………………

फोन नंबर और मेल आईडी…………………………………………………………………

(शोध पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायेगा)

दिनांक:…………………… स्थान:…………………………..